International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

IJCRM

Research Article

भारत की इंडो-पैसिफिक नीति का सामरिक विश्लेषण: एक अध्ययन

डॉ. स्वदेश कुमार *

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, आगरा कॉलेज आगरा ,उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * डॉ. स्वदेश कुमार

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18821596

सारांश

इक्कीसवीं सदी में अंतरराष्ट्रीय राजनीति का केंद्र धीरे-धीरे एशिया-प्रशांत क्षेत्र से विस्तारित होकर इंडो-पैसिफिक क्षेत्र की ओर स्थानांतरित हो गया है। यह क्षेत्र वैश्विक व्यापार, समुद्री सुरक्षा, ऊर्जा आपूर्ति मार्गों और सामरिक प्रतिस्पर्धा के कारण विशेष महत्व रखता है। भारत ने बदलते वैश्विक शक्ति संतुलन और समुद्री भू-राजनीति को ध्यान में रखते हुए इंडो-पैसिफिक क्षेत्र को अपनी विदेश और सुरक्षा नीति का प्रमुख आयाम बनाया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में भारत की इंडो-पैसिफिक नीति का सामरिक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में समुद्री सुरक्षा, क्षेत्रीय संतुलन, बहुपक्षीय सहयोग, आर्थिक हितों, कूटनीतिक रणनीतियों तथा उभरती सुरक्षा चुनौतियों का विश्लेषण शामिल है। शोध से स्पष्ट होता है कि भारत की इंडो-पैसिफिक नीति का मुख्य उद्देश्य मुक्त, समावेशी और नियम-आधारित समुद्री व्यवस्था को बढ़ावा देना तथा क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखना है। साथ ही यह भी पाया गया कि इस नीति के माध्यम से भारत अपनी सामरिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए वैश्विक शक्ति संतुलन में सक्रिय भूमिका निभाने का प्रयास कर रहा है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 11-01-2025
- **Accepted:** 26-02-2025
- **Published:** 28-02-2025
- **IJCRM:**4(1); 2025: 270-273
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

डॉ. स्वदेश कुमार, भारत की इंडो-पैसिफिक नीति का सामरिक विश्लेषण: एक अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2025;4(1):270-273.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

कुंजी शब्द: इंडो-पैसिफिक; भारत की विदेश नीति; समुद्री सुरक्षा; सामरिक संतुलन; क्षेत्रीय सहयोग; समुद्री मार्ग; भू-राजनीति; सामरिक नीति

परिचय

इक्कीसवीं सदी की विश्व राजनीति में इंडो-पैसिफिक क्षेत्र एक अत्यंत महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक अवधारणा के रूप में उभरा है। यह केवल भौगोलिक क्षेत्र की परिभाषा नहीं बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन, समुद्री सुरक्षा, आर्थिक संपर्क और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा से जुड़ा व्यापक ढांचा है [1]। हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को जोड़ने वाला यह क्षेत्र वैश्विक व्यापार और ऊर्जा परिवहन का केंद्र माना जाता है, जहाँ से विश्व का बड़ा हिस्सा समुद्री व्यापार गुजरता है। इसी कारण विश्व की प्रमुख शक्तियाँ इस क्षेत्र में अपनी रणनीतिक उपस्थिति को मजबूत करने का प्रयास कर रही हैं।

भारत के दृष्टिकोण से इंडो-पैसिफिक क्षेत्र का महत्व ऐतिहासिक, भौगोलिक और सामरिक सभी स्तरों पर अत्यंत गहरा है। भारत की समुद्री सीमाएँ, व्यापारिक हित, ऊर्जा आयात और क्षेत्रीय संपर्क इस क्षेत्र से सीधे जुड़े हुए हैं [2]। भारतीय अर्थव्यवस्था का बड़ा भाग समुद्री व्यापार पर निर्भर करता है, इसलिए समुद्री मार्गों की सुरक्षा भारत की

© 2025 डॉ. स्वदेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

राष्ट्रीय सुरक्षा का अभिन्न भाग बन जाती है। यही कारण है कि भारत ने अपनी विदेश नीति और सुरक्षा नीति में समुद्री दृष्टिकोण को अधिक महत्व देना प्रारंभ किया है।

शीत युद्ध के बाद वैश्विक राजनीति में शक्ति संतुलन धीरे-धीरे बदलने लगा और एशिया विश्व राजनीति का केंद्र बनने लगा। इस परिवर्तित परिदृश्य में इंडो-पैसिफिक क्षेत्र नई सामरिक प्रतिस्पर्धाओं का केंद्र बनकर उभरा [3]। समुद्री प्रभाव, व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण और रणनीतिक साझेदारियों ने इस क्षेत्र को अंतरराष्ट्रीय कूटनीति के केंद्र में ला दिया। भारत ने इन परिवर्तनों को समझते हुए अपनी रणनीति को केवल क्षेत्रीय सीमाओं तक सीमित न रखकर व्यापक समुद्री दृष्टिकोण अपनाया।

भारत की इंडो-पैसिफिक नीति की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसका समावेशी स्वरूप है। भारत इस क्षेत्र को किसी एक शक्ति के प्रभुत्व के रूप में नहीं बल्कि सहयोग और नियम-आधारित व्यवस्था के रूप में देखता है [4]। भारत की नीति का मूल सिद्धांत यह है कि समुद्री मार्ग खुले रहें, अंतरराष्ट्रीय कानूनों का पालन हो और सभी देशों को समान अवसर प्राप्त हों। यह दृष्टिकोण भारत की सामरिक स्वायत्तता और संतुलित विदेश नीति को भी प्रतिबिंबित करता है।

समुद्री सुरक्षा भारत की इंडो-पैसिफिक नीति का प्रमुख स्तंभ है। समुद्री डकैती, अवैध तस्करी, आतंकवादी गतिविधियाँ और समुद्री मार्गों की असुरक्षा जैसे मुद्दों ने भारत को अपनी नौसैनिक क्षमता और समुद्री निगरानी प्रणाली को मजबूत करने के लिए प्रेरित किया है [5]। भारत ने क्षेत्रीय देशों के साथ समुद्री सहयोग बढ़ाकर सामूहिक सुरक्षा की अवधारणा को आगे बढ़ाने का प्रयास किया है।

भारत की नीति केवल सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि आर्थिक और संपर्क आधारित दृष्टिकोण भी इसमें शामिल है। हिंद महासागर क्षेत्र व्यापार और ऊर्जा आपूर्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसलिए भारत क्षेत्रीय संपर्क परियोजनाओं और आर्थिक सहयोग को इंडो-पैसिफिक नीति का अभिन्न हिस्सा मानता है [6]। यह नीति भारत को क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर भी प्रदान करती है।

इसके अतिरिक्त, भारत ने विभिन्न बहुपक्षीय मंचों और सामरिक साझेदारियों के माध्यम से इस क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाने का प्रयास किया है। संवाद और सहयोग के माध्यम से क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखना भारत की रणनीतिक सोच का हिस्सा रहा है [7]। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत अपनी नीति को किसी टकराव की रणनीति के रूप में नहीं बल्कि संतुलन और सहभागिता की रणनीति के रूप में देखता है।

हालाँकि इंडो-पैसिफिक क्षेत्र कई चुनौतियों से भी घिरा हुआ है, जिनमें समुद्री विवाद, सैन्य प्रतिस्पर्धा और शक्ति संतुलन की अनिश्चितताएँ शामिल हैं [8]। भारत के लिए चुनौती यह है कि वह अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए क्षेत्रीय स्थिरता और सहयोग को भी बनाए रखे।

इस अध्ययन का उद्देश्य भारत की इंडो-पैसिफिक नीति का सामरिक विश्लेषण करना है, ताकि यह समझा जा सके कि भारत इस क्षेत्र में अपनी भूमिका को किस प्रकार परिभाषित कर रहा है और भविष्य में उसकी रणनीतिक दिशा क्या हो सकती है [9]। यह विश्लेषण भारत की विदेश नीति, समुद्री सुरक्षा और क्षेत्रीय संतुलन की व्यापक समझ प्रदान करता है।

कार्यप्रणाली

प्रस्तुत शोध में गुणात्मक अनुसंधान पद्धति को आधार बनाया गया है, जिसके माध्यम से भारत की इंडो-पैसिफिक नीति का सामरिक विश्लेषण किया गया है [1,10]। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य नीति के मूल उद्देश्यों, सामरिक आयामों, क्षेत्रीय प्रभावों तथा भारत की विदेश नीति में इसके स्थान को समझना है। चूँकि इंडो-पैसिफिक नीति बहुआयामी है और इसमें सुरक्षा, कूटनीति, अर्थव्यवस्था तथा समुद्री रणनीति जैसे अनेक आयाम शामिल हैं, इसलिए गुणात्मक पद्धति को अधिक उपयुक्त माना गया। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए साहित्य समीक्षा, तुलनात्मक विश्लेषण, नीतिगत अध्ययन तथा अवधारणात्मक व्याख्या जैसी पद्धतियों का संयुक्त प्रयोग किया गया, जिससे अध्ययन अधिक समग्र और संतुलित रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

अध्ययन के प्रारंभिक चरण में इंडो-पैसिफिक अवधारणा से संबंधित सैद्धांतिक साहित्य का गहन विश्लेषण किया गया। इसमें वैश्विक भू-राजनीति, समुद्री शक्ति सिद्धांत, अंतरराष्ट्रीय संबंधों के समकालीन दृष्टिकोण और रणनीतिक अध्ययन से जुड़े विचारों का अध्ययन शामिल था [2]। इस चरण का उद्देश्य यह समझना था कि इंडो-पैसिफिक अवधारणा किन ऐतिहासिक और भू-राजनीतिक परिस्थितियों से उत्पन्न हुई तथा यह पारंपरिक एशिया-प्रशांत अवधारणा से किस प्रकार भिन्न है। सैद्धांतिक आधार तैयार करने से अध्ययन को वैचारिक स्पष्टता प्राप्त हुई, जिससे भारत की नीति को व्यापक अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में समझना संभव हुआ।

द्वितीय चरण में भारत की विदेश नीति, समुद्री रणनीति और सामरिक दृष्टिकोण से संबंधित आधिकारिक दस्तावेजों तथा विद्वानों के अध्ययनों का विस्तृत अध्ययन किया गया [3]। इस प्रक्रिया में भारत की समुद्री सुरक्षा प्राथमिकताओं, समुद्री व्यापारिक हितों, क्षेत्रीय सहयोग की नीतियों और सामरिक स्वायत्तता के सिद्धांत का विश्लेषण शामिल था। इस चरण का उद्देश्य यह समझना था कि भारत की इंडो-पैसिफिक नीति उसके दीर्घकालिक राष्ट्रीय हितों और विदेश नीति के व्यापक ढांचे में किस प्रकार समाहित होती है। साथ ही, यह भी विश्लेषित किया गया कि भारत इस नीति के माध्यम से क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर अपनी भूमिका को कैसे परिभाषित कर रहा है।

तृतीय चरण में क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों, आर्थिक हितों और बहुपक्षीय सहयोग की भूमिका का विश्लेषण किया गया [4]। इस चरण में समुद्री सुरक्षा से जुड़े मुद्दों, जैसे समुद्री मार्गों की सुरक्षा, क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा, समुद्री संसाधनों की उपलब्धता और नौसैनिक गतिविधियों का अध्ययन किया गया। साथ ही यह भी देखा गया कि भारत अपनी नीति को केवल सुरक्षा केंद्रित दृष्टिकोण तक सीमित नहीं रखता, बल्कि आर्थिक संपर्क, व्यापारिक सहयोग और कूटनीतिक साझेदारियों को भी समान महत्व देता है। इस विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि भारत की नीति में सुरक्षा और विकास दोनों के बीच संतुलन बनाने का प्रयास निहित है।

इसके बाद विभिन्न शोधों, नीति विश्लेषणों और अकादमिक अध्ययनों से प्राप्त निष्कर्षों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया, ताकि नीति के अवसरों और चुनौतियों का संतुलित मूल्यांकन किया जा सके [5]। इस प्रक्रिया में समुद्री सुरक्षा, क्षेत्रीय शक्ति संतुलन, आर्थिक सहयोग, बहुपक्षीय मंचों की भूमिका तथा सामरिक प्रतिस्पर्धा जैसे आयामों को विशेष महत्व दिया गया। तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया कि भारत की नीति अन्य क्षेत्रीय नीतियों से किस प्रकार भिन्न है और उसकी विशिष्टताएँ क्या हैं।

© 2025 डॉ. स्वदेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अध्ययन के अगले चरण में उपलब्ध साहित्य का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया गया, जिसमें विभिन्न दृष्टिकोणों के बीच समानताओं और भिन्नताओं की पहचान की गई। इस प्रक्रिया ने अध्ययन को एकपक्षीय दृष्टिकोण से बचाते हुए अधिक संतुलित और विश्लेषणात्मक स्वरूप प्रदान किया। इसके माध्यम से नीति के सकारात्मक पक्षों के साथ-साथ संभावित सीमाओं और चुनौतियों को भी स्पष्ट रूप से समझा जा सका। शोध को वर्ष 2024 तक उपलब्ध साहित्य और स्रोतों तक सीमित रखा गया है, ताकि निष्कर्ष समकालीन सामरिक परिस्थितियों और वर्तमान अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य के अनुरूप बने रहें [10]। अध्ययन का उद्देश्य नवीनतम सामरिक परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए भारत की नीति की प्रासंगिकता और प्रभावशीलता का विश्लेषण करना था। इस संदर्भ में समकालीन घटनाओं और सामरिक रुझानों को भी अध्ययन की पृष्ठभूमि में शामिल किया गया।

अनुसंधान मुख्यतः व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है, जिसमें मात्रात्मक आंकड़ों की अपेक्षा नीतिगत तथा रणनीतिक विश्लेषण को प्राथमिकता दी गई है। इसका कारण यह है कि इंडो-पैसिफिक नीति का मूल्यांकन केवल संख्यात्मक आंकड़ों के आधार पर संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए सामरिक संदर्भों और नीति-स्तरीय निर्णयों की गहन व्याख्या आवश्यक होती है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि अपनाई गई कार्यप्रणाली बहुस्तरीय और समग्र दृष्टिकोण पर आधारित है, जो भारत की इंडो-पैसिफिक नीति को सुरक्षा, आर्थिक, कूटनीतिक और सामरिक सभी आयामों से समझने में सहायक सिद्ध होती है। यह पद्धति अध्ययन को न केवल सैद्धांतिक रूप से मजबूत बनाती है, बल्कि नीति के व्यावहारिक प्रभावों का संतुलित विश्लेषण प्रस्तुत करने में भी सक्षम बनाती है।

परिणाम

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारत की इंडो-पैसिफिक नीति का मुख्य उद्देश्य समुद्री सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता को सुनिश्चित करना है। भारत मुक्त, समावेशी और नियम-आधारित समुद्री व्यवस्था का समर्थन करता है, जिससे सभी देशों को समान अवसर मिल सकें [6]।

भारत ने क्षेत्रीय साझेदारियों और समुद्री सहयोग के माध्यम से अपनी रणनीतिक उपस्थिति को मजबूत किया है। यह नीति दर्शाती है कि भारत सामूहिक सुरक्षा और सहयोगात्मक दृष्टिकोण को प्राथमिकता देता है, न कि टकराव को [7]।

आर्थिक दृष्टि से भी इंडो-पैसिफिक भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि ऊर्जा आपूर्ति और व्यापारिक संपर्क इसी क्षेत्र से होकर गुजरते हैं। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारत अपनी आर्थिक सुरक्षा को मजबूत करने के लिए समुद्री संपर्क और व्यापारिक मार्गों पर विशेष ध्यान दे रहा है [8]।

साथ ही, क्षेत्रीय शक्ति प्रतिस्पर्धा और समुद्री विवाद भारत की नीति के सामने प्रमुख चुनौतियों के रूप में उभरते हैं। भारत को अपनी सामरिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए संतुलन की नीति अपनानी पड़ती है [9]।

विश्लेषण से यह भी स्पष्ट होता है कि भारत की इंडो-पैसिफिक नीति एक दीर्घकालिक सामरिक दृष्टि का हिस्सा है, जिसमें सुरक्षा, आर्थिक सहयोग और कूटनीतिक संतुलन तीनों को समान महत्व दिया गया है। यह नीति भारत को क्षेत्रीय शक्ति से वैश्विक भूमिका की ओर आगे बढ़ाने का प्रयास करती है।

तालिका 1: भारत की इंडो-पैसिफिक नीति के प्रमुख आयाम

आयाम	प्रमुख विशेषता
समुद्री सुरक्षा	समुद्री मार्गों की सुरक्षा
आर्थिक हित	व्यापार और ऊर्जा आपूर्ति
कूटनीतिक सहयोग	बहुपक्षीय संवाद
सामरिक संतुलन	क्षेत्रीय स्थिरता

तालिका 2: नीति के अवसर और चुनौतियाँ

क्षेत्र	विश्लेषण
अवसर	क्षेत्रीय नेतृत्व और सहयोग
आर्थिक लाभ	समुद्री व्यापार विस्तार
चुनौतियाँ	सामरिक प्रतिस्पर्धा
सुरक्षा मुद्दे	समुद्री विवाद और अस्थिरता

चर्चा एवं निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारत की इंडो-पैसिफिक नीति एक व्यापक, संतुलित और बहुआयामी दृष्टिकोण पर आधारित है, जो पारंपरिक सुरक्षा अवधारणाओं से आगे बढ़कर आर्थिक, कूटनीतिक और सामरिक आयामों को समाहित करती है। यह नीति केवल सैन्य शक्ति प्रदर्शन या समुद्री सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य क्षेत्र में सहयोग, स्थिरता और नियम-आधारित व्यवस्था को प्रोत्साहित करना भी है। भारत इंडो-पैसिफिक को एक ऐसे क्षेत्र के रूप में देखता है जहाँ परस्पर निर्भरता, व्यापारिक संपर्क और सामूहिक सुरक्षा को संतुलित रूप से विकसित किया जा सके। इस नीति के माध्यम से भारत यह संदेश देता है कि क्षेत्रीय स्थिरता केवल शक्ति संतुलन से नहीं बल्कि संवाद, सहयोग और समावेशिता से भी सुनिश्चित की जा सकती है।

भारत की नीति का एक महत्वपूर्ण पहलू आर्थिक सहयोग और समुद्री व्यापार की सुरक्षा है। हिंद महासागर से होकर गुजरने वाले व्यापारिक मार्ग भारत की ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। इसलिए भारत क्षेत्रीय संपर्क, बंदरगाह विकास और समुद्री अवसंरचना जैसे क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहा है। यह दृष्टिकोण दर्शाता है कि भारत इंडो-पैसिफिक को केवल सामरिक प्रतिस्पर्धा का क्षेत्र न मानकर आर्थिक अवसरों के मंच के रूप में भी देखता है। इसके साथ ही, बहुपक्षीय साझेदारियों और संवाद मंचों में सक्रिय भागीदारी भारत की इस नीति को अधिक संतुलित बनाती है, जिससे क्षेत्रीय देशों के साथ विश्वास और सहयोग बढ़ाने में सहायता मिलती है।

कूटनीतिक दृष्टि से भी भारत की इंडो-पैसिफिक नीति समावेशिता पर आधारित है। भारत किसी भी प्रकार के विभाजनकारी या टकराव आधारित गठबंधनों से बचते हुए संतुलित संबंध बनाए रखने की रणनीति अपनाता है। यह नीति भारत की सामरिक स्वायत्तता को बनाए रखने में सहायक होती है, क्योंकि भारत अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए विभिन्न शक्तियों के साथ संवाद और सहयोग जारी रखता है। इस प्रकार भारत स्वयं को क्षेत्रीय स्थिरता में एक जिम्मेदार और संतुलित शक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है।

© 2025 डॉ. स्वदेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

हालाँकि, इस नीति के सामने अनेक चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में बढ़ती सामरिक प्रतिस्पर्धा, समुद्री विवाद और शक्ति संतुलन की अनिश्चितताएँ भविष्य में नीति के प्रभावी क्रियान्वयन को प्रभावित कर सकती हैं। विभिन्न शक्तियों के हितों के टकराव के कारण क्षेत्रीय राजनीति जटिल होती जा रही है, जिससे भारत को अपनी रणनीति में सावधानी और लचीलापन बनाए रखना आवश्यक हो जाता है। इसके अतिरिक्त समुद्री सुरक्षा के नए आयाम, जैसे समुद्री संसाधनों पर प्रतिस्पर्धा और सुरक्षा जोखिम, भारत के लिए दीर्घकालिक चुनौती प्रस्तुत करते हैं।

इन परिस्थितियों में भारत को अपनी समुद्री क्षमताओं को और अधिक सुदृढ़ करने की आवश्यकता होगी। नौसैनिक आधुनिकीकरण, समुद्री निगरानी, क्षेत्रीय सहयोग और समुद्री अवसंरचना का विकास इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं। साथ ही आर्थिक साझेदारियों को मजबूत बनाकर भारत अपनी रणनीतिक स्थिति को और प्रभावशाली बना सकता है। कूटनीतिक स्तर पर संतुलित संबंध बनाए रखना भी आवश्यक होगा, ताकि भारत अपनी सामरिक स्वायत्तता को बनाए रखते हुए बहुपक्षीय सहयोग को आगे बढ़ा सके।

संदर्भ

1. शर्मा आर. इंडो-पैसिफिक और वैश्विक राजनीति. 2019.
2. सिंह ए. भारत की समुद्री रणनीति. 2020.
3. वर्मा के. इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में शक्ति संतुलन. 2021.
4. गुप्ता आर. भारत की विदेश नीति के नए आयाम. 2022.
5. चौधरी एस. समुद्री सुरक्षा और भारत. 2023.
6. नायर वी. समुद्री मार्ग और आर्थिक सुरक्षा. 2021.
7. भटनागर एम. क्षेत्रीय सहयोग और सामरिक नीति. 2022.
8. मिश्रा पी. इंडो-पैसिफिक भू-राजनीति का विश्लेषण. 2023.
9. अग्रवाल डी. भारत की सामरिक चुनौतियाँ. 2024.
10. तिवारी एल. भारत की इंडो-पैसिफिक दृष्टि. 2024.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 डॉ. स्वदेश कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/